Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, General Impact Factor : 2.3982, Volume 08, No. 01, January, 2018, pp. 570-572

माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर आगमन–निगमन विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन

रजनी यादव *
डॉ. अलका पारीक **

सार

सामाजिक विज्ञान विषय में वर्तमान में भी परम्परागत विधियों जैसे– व्याख्यान, पाठ्यपुस्तक विधि का ही प्रयोग किया जा रहा है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर आगमन एवं निगमन विधि की प्रभावशीलता का प्रयोगात्मक अध्ययन किया गया है। इसके लिए जयपुर जिले के शहरी क्षेत्र के 3 सरकारी व 1 गैर सरकारी विद्यालय में के 150 छात्र–छात्राओं के तीन समूहों को आगमन, निगमन एवं व्याख्यान विधि आधारित नागरिक शास्त्र, इतिहास तथा भूगोल विषय के 5–5 व स्वनिर्मित पाठयोजनाओं का निर्माण कर शिक्षण करवाया गया। शिक्षण पूर्व परीक्षण एवं शिक्षण पश्चात् परीक्षण से प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण मध्यमान, प्रमाप विचलन तथा टी–परीक्षण की सहायता से किया गया। जिसके परिणाम में यह पाया गया कि तीनों ही शिक्षण विधियों के पूर्व परीक्षण के प्राप्तांकों की तुलना में पश्च परीक्षण के प्राप्तांक उच्च रहे। आगमन विधि की उपलब्धि पर प्रभावशीलता सर्वाधिक, निगमन विधि की उससे कम तथा व्याख्यान विधि की प्रभावशीलता सबसे कम पाई गई।

प्रस्तावना

शिक्षक अपने शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु तथा शिक्षण प्रक्रिया को सरल, सुगम एवं सुग्राही बनाने के लिए शिक्षण में नवीन विधियों का प्रयोग करता है। शिक्षण के अंतर्गत शिक्षक नवीन विधियों का परम्परागत विधियों के साथ या केवल एक विधि को प्रयुक्त करके भी उत्तम परिणाम प्राप्त करने का प्रयास करते है। सामाजिक विज्ञान विषय में आगमन एवं निगमन विधि का प्रयोग शिक्षक यदा–कदा ही करते है वो भी किसी एक या कुछ शिक्षण बिन्दुओं के शिक्षण हेतु। वास्तव में इन विधियों द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय का शिक्षण अन्य विधियों की तुलना में किंचित कठिन होता है परन्तु असंभव नहीं। इन विधियों के प्रयोग द्वारा शिक्षक शिक्षण में रोचकता व नवीनता ला सकता है। विद्यार्थी भी नवीन विधियों से शिक्षण में रूचि दिखाते है। साथ ही इन विधियों के प्रयोग से उपलब्धि में भी वृद्धि होती है।

अनुसंधान की आवश्यकता एवं महत्व

वर्तमान समय में विज्ञान, गणित विषयों में विद्यार्थी अधिक रूचि लेते हैं। ऐसे में सामाजिक विज्ञान विषय अपनी उपादेयता खोता जा रहे है। अतः नवाचारी विधियों द्वारा सामाजिक विज्ञान विषय का शिक्षण अनिवार्य हो जाता है ताकि विद्यार्थी विषय में रूचि ले, पाठ्य विषयवस्तु को अधिक तर्कसंगत बनाया जा सके तथा सामाजिक विज्ञान विषय भी वैज्ञानिकता का कुछ स्वरूप अपना सके।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर आगमन विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर निगमन विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।

* शोधार्थी, शिक्षा संकाय, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, एस.एस. जैन सुबोध महिला पी.जी. कॉलेज ऑफ एज्यूकेशन, सांगानेर, जयपुर, राजस्थान।

- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर व्याख्यान विधि की प्रभावशीलता का अध्ययन करना।
- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के विद्यार्थियों की उपलब्धि पर आगमन विधि, निगमन विधि तथा व्याख्यान विधि की प्रभावशीलता में अन्तर का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

- सामाजिक विज्ञान विषय में व्याख्यान विधि से शिक्षण का माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।
- सामाजिक विज्ञान विषय में आगमन विधि से शिक्षण का माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।
- सामाजिक विज्ञान विषय में निगमन विधि से शिक्षण का माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाता।

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रयोगात्मक अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन के उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में सामाजिक विज्ञान विषय के अंतर्गत इतिहास, नागरिक शास्त्र एवं भूगोल विषय की माध्यमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों की विषयवस्तु की आगमन, निगमन एवं व्याख्यान शिक्षण विधि आधारित स्वनिर्मित पाठयोजनाओं का निर्माण किया गया है।

शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत अध्ययन में एकत्रित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन व टी–परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

शोध अध्ययन का न्यादर्श

शोधकर्त्री द्वारा न्यादर्श के रूप में जयपुर जिले के शहरी क्षेत्र के 3 सरकारी व 1 गैर सरकारी विद्यालयों के 150 विद्यार्थियों का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

परिकल्पना 1: सामाजिक विज्ञान विषय में व्याख्यान विधि से शिक्षण का माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (S.D.)	मानक मध्यमान त्रुटि
पूर्व परीक्षण	50	34.26	8.126	1.149
पश्च परीक्षण	50	40.06	8.501	1.202

तालिका संख्या: 1.2

समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मानक मध्यमान त्रुटि	95: विश्वसनीयता अंतराल पर अंतर		t	सार्थकता
				उच्च	निम्न		
सामाजिक विज्ञान विषय में व्याख्यान विधि से शिक्षण से पूर्व व पश्चात् परीक्षणों के परिणामों का अंतर	5.800	2.040	.289	6.380	5.220	20.100	.000

df = 49

तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं के व्याख्यान विधि से शिक्षण से पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच टी अनुपात का परिगणित मान 20.100 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर 49 स्वतंत्रता स्तर के टी मान (1.96) से अधिक है अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 2: सामाजिक विज्ञान विषय में आगमन विधि से शिक्षण का माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (S.D.)	मानक मध्यमान त्रुटि
पूर्व परीक्षण	50	37.68	9.782	1.383
पश्च परीक्षण	50	48.22	13.354	1.889

तालिका संख्याः 2.2

समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मानक मध्यमान त्रुटि	95ः विश्वसनीयता अंतराल पर अंतर		t	सार्थकता
				उच्च	निम्न		
सामाजिक विज्ञान विषय में आगमन विधि द्वारा शिक्षण से पूर्व व पश्चात् परीक्षणों के परिणामों का अंतर	10.540	6.058	.857	12.262	8.818	12.302	.000

df = 49

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को सामाजिक विज्ञान विषय का शिक्षण आगमन विधि से कराने से पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच टी अनुपात का परिगणित मान 12.302 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर 49 स्वतंत्रता स्तर के टी मान (1.96) से अधिक है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

परिकल्पना 3ः सामाजिक विज्ञान विषय में निगमन विधि से शिक्षण का माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव

समूह (G)	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रमाप विचलन (S.D.)	मानक मध्यमान त्रुटि
पूर्व परीक्षण	50	39.76	8.539	1.208
पश्च परीक्षण	50	47.32	8.082	1.143

तालिका संख्याः 3.2

समूह	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मानक मध्यमान त्रुटि	95ः विश्वसनीयता अंतराल पर अंतर		t	सार्थकता
				उच्च	निम्न		
सामाजिक विज्ञान विषय में निगमन विधि द्वारा शिक्षण से पूर्व एवं पश्चात् परीक्षण के परिणामों का अंतर	7.560	1.950	.276	8.114	7.006	27.414	.000

df = 49

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को सामाजिक विज्ञान विषय का शिक्षण निगमन विधि से कराने से पूर्व एवं पश्च परीक्षणों के प्राप्तांकों के मध्यमानों के बीच टी अनुपात का परिगणित मान 27.414 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर 49 स्वतंत्रता स्तर के टी मान (1.96) से अधिक है। अतः यह परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निष्कर्ष

- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर व्याख्यान विधि की प्रभावशीलता पायी गयी।
- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर आगमन विधि की प्रभावशीलता पायी गयी।
- माध्यमिक स्तर के सामाजिक विज्ञान विषय के छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि पर निगमन विधि की प्रभावशीलता पायी गयी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- Sharma, R.A. : "Shiksha Anusandhan" (2005), Surya Publication, Meerut.
- Purohit, Jagdish Narayan : "Shikshan Ke Liye Ayojan" (2006), Rajasthan Hindi Granth Akadmi, Jaipur.

☯☯☯